उत्तर प्रदेश उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, इलाहाबाद

हिन्दी
(विषय कोड–01)

इकाई–1 :हिन्दी भाषा और उसका विकास :

अपभ्रंश (अवहट्ट सहित) और पुरानी हिन्दी का सम्बन्ध, काव्यभाषा के रूप में अवधी का उदय और विकास, काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा का उदय और विकास, साहित्यिक हिन्दी के रूप में खड़ी बोली का उदय और विकास, मानक हिन्दी का भाषा वैज्ञानिक विवरण (रूपगत), हिन्दी की बोलियां– वर्गीकरण तथा क्षेत्र, नागरी लिपि का विकास और उसका मानकीकरण।

हिन्दी प्रसार के आन्दोलन, प्रमुख व्यक्तियों तथा संस्थाओं का योगदान, राजभाषा के रूप में हिन्दी।

हिन्दी भाषा–प्रयोग के विविध रूप–बोली, मानकभाषा, सम्पर्कभाषा, राजभाषा और राष्ट्रभाषा, संचार माध्यम और हिन्दी।

इकाई–2 :हिन्दी साहित्य का इतिहास :

हिन्दी साहित्य का इतिहास–दर्शन, हिन्दी साहित्य के इतिहास–लेखन की पद्धतियॉ।

हिन्दी साहित्य के प्रमुख इतिहास ग्रन्थ, हिन्दी के प्रमुख साहित्यिक केन्द्र, संस्थाऍ एवं पत्र–पत्रिकाएं, हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल–विभाजन और नामकरण।

आदिकाल : हिन्दी साहित्य का आरम्भ कब और कैसे? रासो–साहित्य, आदिकालीन हिन्दी का जैन साहित्य, सिद्ध और नाथ साहित्य, अमीर खुसरो की हिन्दी कविता, विद्यापति और उनकी पदावली, आरम्भिक गद्य तथा लौकिक साहित्य।

मध्यकाल : भक्ति–आन्दोलन के उदय के सामाजिक–सांस्कृतिक कारण, प्रमुख निर्गुण एवं सगुण सम्प्रदाय, वैष्णव भक्ति की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, आलवार सन्त, प्रमुख सम्प्रदाय और आचार्य, भक्ति आन्दोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्तःप्रादेशिक वैशिष्ट्य।

हिन्दी सन्त काव्य : सन्त काव्य का वैचारिक आधार, प्रमुख निर्गुण सन्त कवि कबीर, नानक, दादू, रैदास, सन्त काव्य की प्रमुख विशेषताऍ, भारतीय धर्म साधाना में सन्त कवियों का स्थान।

हिन्दी सूफी काव्य : सूफी काव्य का वैचारिक आधार, हिन्दी के प्रमुख सूफी कवि और काव्य–मुल्ला दाउद (चन्दायन), कुतुबन (मिरगावती), मंझन (मधुमालती), मलिक मुहम्मद जायसी (पद्मावत), सूफी प्रेमाख्यानकों का स्वरूप, हिन्दी सूफी काव्य की प्रमुख विशेषताऍ–

हिन्दी कृष्ण काव्य : विविध सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, अष्टछाप, प्रमुख कृष्ण–भक्त कवि और काव्य, सूरदास (सूरसागर), नन्ददास (रास पंचाध्यायी), भ्रमरगीत परम्परा, गीति परम्परा और हिन्दी कृष्ण काव्य –मीरा और रसखान।

हिन्दी राम काव्य : विविध सम्प्रदाय, राम भक्ति शाखा के कवि और काव्य, तुलसीदास की प्रमुख कृतियॉ, काव्य रूप और उनका महत्व।

रीति काल : सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, रीतिकाव्य के मूल स्रोत, रीतिकाल की प्रमुख प्रवृतियां, रीतिकालीन कवियों का आचार्यत्व, रीतिमुक्त काव्यधारा, रीतिकाल के प्रमुख कवि : केशवदास, मतिराम, भूषण, बिहारीलाल, देव घनानन्द और पद्माकार, रीतिकाव्य में लोकजीवन।

आधुनिक काल : हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास।

भारतेन्दु पूर्व हिन्दी पद्य, 1857 की राज्य क्रान्ति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, भारतेन्दु और उनका मण्डल, 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की हिन्दी पत्रकारिता।

द्विवेदी युग : महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, हिन्दी नवजागरण और सरस्वती, मैथिलीशरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्यधारा, राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि, स्वच्छन्दतावाद और उसके प्रमुख कवि।

छायावाद और उसके बाद : छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ, छायावाद के प्रमुख कवि :प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी, उत्तर छायावादी काव्य और उसके प्रमुख कवि, प्रगतिशील काव्य और उसके प्रमुख कवि, प्रयोगवाद और नई कविता, नई कविता के कवि, समकालीन कविता, समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता।

भक्ति काव्य की पूर्व–पीठिका, सिद्ध–जैन नाथ साहित्य।

भक्ति–काव्य का स्वरूप, भेद, निर्गुण–सगुण का सम्बन्ध, साम्य और वैषम्य।

कबीर : भक्ति–भावना, समाज–दर्शन, विद्रोह–भावना, काव्य–कला।

जायसी : प्रेम–भावना, लोक तत्व, कथानक रूढ़ि, काव्य–दृष्टि।

सूरदास : भक्ति–भावना, वात्सल्य–वर्णन, गीति–तत्व।

तुलसीदास : भक्ति–भावना, सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि, लोकमंगल, काव्य–दृष्टि।

सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि, प्रमुख प्रवृत्तियॉ, विविध काव्य–धाराएँ।

केशव : आचार्यत्व, काव्य–दृष्टि, संवाद–योजना।

बिहारी : सौन्दर्य–भावना, बहुज्ञता, काव्य–कला।

भूषण : युग–बोध, अन्तर्वस्तु, काव्य–कला।

घनानन्द : स्वच्छंद योजना, प्रेम–व्यंजना, काव्य–दृष्टि।

इकाई–3 :हिन्दी साहित्य की गद्य विधाएँ :

हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्द पूर्व उपन्यास, प्रेमचन्द और उनका युग, प्रेमचन्द के परवर्ती प्रमुख उपन्यासकार : जैनेन्द्र, अज्ञेय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, यशपाल, अमृतलाल नागर, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, निर्मल वर्मा, नरेश मेहता, श्रीलाल शुक्ल, राही मासूम रजा, रांगेय राधव, मन्नू भण्डारी।

हिन्दी कहानी : बीसवीं सदी की हिन्दी कहानी और प्रमुख कहानी आन्दोलन।

हिन्दी नाटक : हिन्दी नाटक और रंगमंच, विकास के चरण और प्रमुख नाट्यकृतियां : अंधेर नगरी, चन्द्रगुप्त, अंधायुग, आधे–अधूरे, आठवां सर्ग, हिन्दी एकांकी।

हिन्दी निबन्ध : हिन्दी निबन्ध के प्रकार और प्रमुख निबन्धकार –रामचन्द्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र, हरिशंकर परसाई।

हिन्दी आलोचना : हिन्दी आलोचना का विकास और प्रमुख आलोचक : रामचन्द्र शुक्ल, नन्ददुलारे वाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, डॉ0 नगेन्द्र, डॉ0 नामवर सिंह, विजयदेव नारायण साही।

हिन्दी की अन्य गद्य विधाएं : रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा–साहित्य, आत्मकथा, जीवनी और रिपोर्ताज।

इकाई–4 :काव्यशास्त्र और आलोचनां :

भरत मुनि का रस सूत्र और उसके प्रमुख व्याख्याकार।
रस के अवयव।
साधारणीकरण।
शब्द शक्तियॉ और ध्वनि का स्वरूप।
अलंकार– यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रान्तिमान, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति, अत्युक्ति, विशेषोक्ति, दृष्टान्त, उदाहरण, प्रतिवस्तूपमा, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, विभावना, असंगति तथा विरोधाभास।
रीति, गुण, दोष।
मिथक, फन्तासी, कल्पना, प्रतीक और बिम्ब।
स्वच्छन्दतावाद और यथार्थवाद, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता।
समकालीन आलोचना की कतिपय अवधारणाएॅ : विडम्बना (आयरनी), अजनबीपन (एलियनेशन), विसंगति (एब्सर्ड), अन्तर्विरोध (पैराडॉक्स), विखण्डन (डीकन्स्ट्रक्शन)।
काव्य–हेतु और काव्य–प्रयोजन।
प्रमुख सिद्धान्त–रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य–सामान्य परिचय।
रस–निष्पत्ति।
हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास।
आधुनिक हिन्दी आलोचना और प्रमुख आलोचक –रामचन्द्र शुक्ल और रस–दृष्टि तथा लोकमंगल की अवधारणा, नन्ददुलारे वाजपेयी–सौष्ठववादी आलोचना। रामविलास शर्मा–मार्क्सवादी समीक्षा।
प्लेटो और अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त तथा अरस्तू का विरेचन सिद्धान्त।
लोंजाइनस : काव्य में उदात्त तत्व।
क्रोंचे का अभिव्यंजनावाद।
आई0ए0 रिचर्ड्स–संप्रेषण सिद्धान्त।
नयी समीक्षा।

इकाई–5 :आधुनिकता : अवधारणा और उसके उदय की पृष्ठभूमि, हिन्दी पुनर्जागरण और भारतेन्दु।
महावीर प्रसाद द्विवेदी : नवजागरण, काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली की प्रतिष्ठा, हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त।
छायावाद : सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि, वैचारिक पृष्ठभूमि, स्वाधीनता की चेतना, गांधी का प्रभाव, अन्तर्धाराएॅ, राष्ट्रीय काव्य–धारा।
प्रसाद : जीवन–दर्शन, सांस्कृतिक दृष्टि, सौन्दर्य चेतना।
पंत : प्रकृति–चित्रण, काव्य–यात्रा, काव्य–भाषा।
निराला : सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि, प्रगति–चेतना, मुक्त छंद।
महादेवी : वेदना तत्व, प्रगीति, प्रतीक–योजना।
वैचारिक पृष्ठभूमि, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद।

प्रगतिवाद : सामाजिक दृष्टि, नागार्जुन–यथार्थ चेतना और लोक–दृष्टि, केदारनाथ अग्रवाल– प्रकृति चित्रण और सौन्दर्य बोध।
प्रयोगवाद : व्यष्टि–चेतना, अज्ञेय–प्रयोगधर्मिता और काव्य–भाषा।
नयी कविता : व्यष्टि–समष्टि–बोध, मुक्तिबोध– समाज–बोध, फैंटसी।
समकालीन कविता : काल संसक्ति और लोक संसक्ति, रघुवीर सहाय –राजनीतिक चेतना, काव्य–भाषा, कुंवर नारायण– मिथकीय चेतना, काव्य–दृष्टि।

इकाई–6 :गल्प और इतिहास, कल्पना और यथार्थ।
प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास : परीक्षा गुरू, चन्द्रकांता – वस्तु और शिल्प।
प्रेमचन्द युगीन उपन्यास : गोदान।
प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास : शेखर एक जीवनी – मैला आंचल –वस्तु–शिल्प, आंचलिकता।
बाणभट्ट की आत्मकथा– इतिहास और संस्कृति चेतना, भाषा–शिल्प वैशिष्टय।
कहानी और प्रमुख कहानीकार– प्रेमचन्द और प्रसाद की कहानी–कला, प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी और नयी कहानी, संवेदना और शिल्प।
मध्यवर्ग का उदय और उपन्यास, उपन्यास और यथार्थ तथा उनके विविध रूप, उपन्यास में इतिहास, कल्पना और आधुनिकता।
हिन्दी नाटक और भारतेन्दु : भारत–दुर्दशा, अंधेर नगरी, यथार्थ बोध।
प्रसाद के नाटक : चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना, नाट्य–शिल्प।
प्रसादोत्तर नाटक : अंधायुग, आधे–अधूरे –आधुनिकता बोध, प्रयोगधर्मिता और नाटय–भाषा।
निबन्ध और प्रमुख निबन्धकार : बालकृष्ण भट्ट, रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि, अन्तर्वस्तु और शिल्प।
शुक्लोत्तर निबन्ध और निबन्धकार : हजारी प्रसाद द्विवेदी, कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र, संस्कृति–बोध, लोक–संस्कृति।

इकाई–7 :कबीर–हजारी प्रसाद द्विवेदी – दोहा–पद सं0 160–209
जायसी ग्रंथावली–सं0 रामचन्द्र शुक्ल–नागमती वियोग खण्ड
सूरदास– भ्रमरगीत–सार–सं0 रामचन्द्र शुक्ल 21 से 70 तक
तुलसीदास– उत्तरकाण्ड, रामचरितमानस– गीता प्रेस, गोरखपुर
प्रसाद– कामायनी–श्रद्धा, इड़ा सर्ग
निराला– राम की शक्ति पूजा, कुकुरमुत्ता
अज्ञेय– असाध्यवीणा, नदी के द्वीप
मुक्तिबोध– अंधेरे में।

नोट–प्रत्येक इकाई से न्यूनतम 07 प्रश्न पूंछना अनिवार्य है।